महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारधाराओं का भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रभाव

केशव कुमार बर्नवाल

महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारधाराओं का भारतीय राष्ट्रवाद पर अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। गाँधी जी का राष्ट्रीय जीवन में आगमन ऐसे समय में हुआ जब देश में ब्रिटेन के आर्थिक नीतियों के प्रति व्यापक असंतोष था। दक्षिण अफ्रिका से लौटने के बाद गाँधी जी ने भारत के नवोदित राष्ट्रवाद का प्रथम सफल प्रयोग चम्पारण सत्याग्रह में ही किया था। चम्पारण में गाँधी जी के नेतृत्व वाला यह आन्दोलन वस्तुतः गाँधी जी के आर्थिक विचारधाराओं के अनुकूल था। गाँधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रवाद का यह पहला प्रयोग अहिंसा, सत्य एवं शोषित दलित जनसमूह के जागरण तथा उन्मुक्ति पर बल देने के कारण सर्वथा अद्वितीय था। इस आन्दोलन में गाँधी जी ने आर्थिक विषमताओं को दूर करने पर बल दिया।

महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारधाराओं का भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर बहुत बड़े सकारात्मक प्रभाव पड़े। गाँधी जी के नेतृत्व वाला कोई भी आन्दोलन हो उसके बुनियाद में आर्थिक राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि अपने प्रबलतम रूप में विराजमान था। पराधीन भारत के सामाजिक जागरूकता एवं आर्थिक गतिशीलता को प्राप्त करने का लक्ष्य गाँधी जी ने अपने विविध आन्दोलनों के साथ जोड़ा, जिससे समाज के पिछड़े, शोषित, कृषक एवं श्रमिक वर्ग को विकसित करने का मौका मिला तथा आन्दोलन का स्वरूप भी मजबुत हुआ।